शौर्यगाथाएँ

Vol.4

जाँबाज़ इलंगो

सत्य घटनाओं पर आधारित

वीरता का पुलिस पदक

वरीयता क्रम में राष्ट्रपति के वीरता के पुलिस पदक के बाद आने वाला वीरता का पुलिस पदक देश की आंतरिक सुरक्षा, देश हित और देश की रक्षा के लिए अपने प्राण तक न्यौछावार कर देने वाले वीर पुलिस कर्मियों को राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किया जाता है। इस पदक के साथ एक मासिक–भत्ता भी प्रदान किया जाता है जो कार्मिक की सेवानिवृत्ति के बाद भी जारी रहता है तथा कार्मिक के मृत्युपरांत उसके आश्रित को भी दिया जाता है। लगातार दूसरी बार यह पदक पुलिस पदक बार – एक और इसी क्रम में पुलिस पदक बार –दो और आगे क्रमिक रूप से जारी रहता है।

के.रि.पु.बल

शौर्यगाथाएँ

जाँबाज़ इलंगो

वीरता का पुलिस पदक

CENTRAL RESERVE POLICE FORCE

प्रस्तुतिः विकास सेठी
आलेखः अनिल
चित्रांकनः सुर्बोज्योति भट्टाचार्य
कवरः राज चौधरी
रंगकारः देबोलीना चक्रवर्ती
शब्दांकनः आनन्द द्विवेदी

Published by Pixel2Pixel on behalf of Directorate General, CRPF

Pixel2Pixel
259, 3rd Floor, Hauz Rani,
Opp Max Hospital, Saket,
New Delhi - 110017

www.pixel2pixel.in
info@pixel2pixel.in

Copyright © 2016 Central Reserve Police Force

Printed by Printland Digital (I) Pvt. Ltd. in April, 2016

All right reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means, including photocopying, recording, or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of the publisher. For permission requests, write to the publisher, addressed "Attention: Permissions Coordinator," at the address below:

Inspector General (Operations)

Central Reserve Police Force

Email: igops@crpf.gov.in

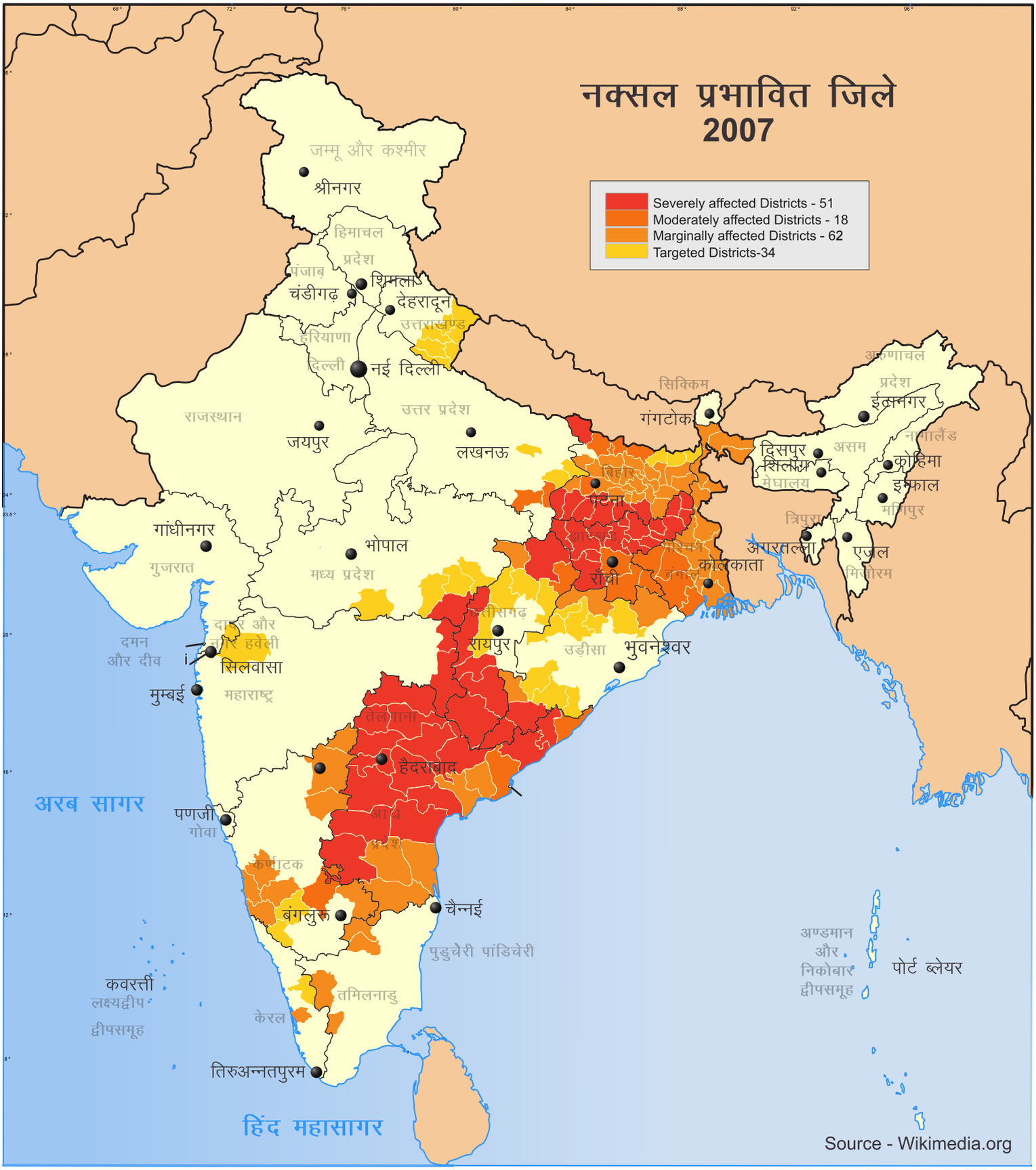

भारत की पूर्वी और मध्य पट्टी के 11 राज्यों के करीब 180 जिले माओवादी उपद्रव तथा हिंसा के शिकार रहे हैं। आंध्र प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल के दुर्गम आदिवासी इलाकों में माओवादियों ने अपने अड्डे बना रखे हैं।

एक अनुमान के मुताबिक 1996 से 2015 तक माओवादियों ने इन इलाकों में 7616 गरीब नागरिकों की हत्याएँ की हैं। मगर अब परिस्थिति बदलने लगी है। इन इलाकों में सुरक्षा बलों ने अपनी पैठ बना कर माओवादी हिंसा पर अंकुश लगाया है और विकास कार्यों के लिए माहौल पैदा किया है।

इस दौरान माओवादियों के साथ केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, स्थानीय पुलिस और अन्य सुरक्षा बलों से मुठभेड़ में 2994 माओवादी मारे गये हैं। सुरक्षा बलों के निरंतर प्रयासों से माओवादी अब इन राज्यों के 180 जिलों से सिमट कर मात्र 83 जिलों तक रह गए है। मगर इतने महत्वपूर्ण लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सुरक्षा बलों ने अनगिनत कुर्बानियाँ दी हैं।

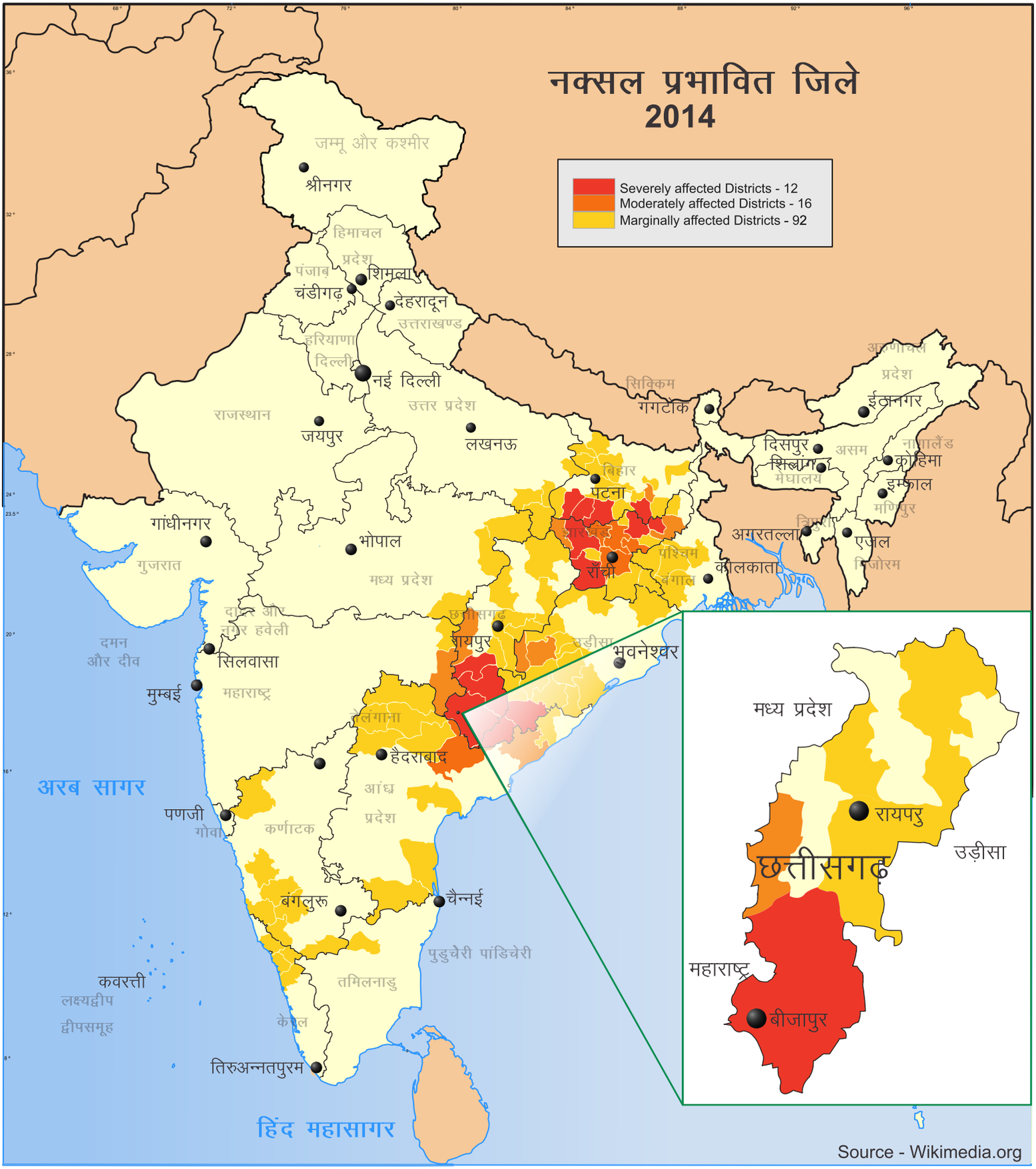

छततीसगढ़ अपने गठन के पूर्व से ही भारी माओवादी हिंसा और माओवादी गतिविधियों का केंद्र रहा है। छत्तीसगढ़ के दूरदराज के आदिवासी इलाकों और बीहड़ वन प्रदेशों से माओवादियों को खदेड़ने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अधिकारियों और ज़वानों ने भारी कीमत चुकाई है। इसके परिणाम प्रत्यक्ष हैं। छत्तीसगढ़ में भी माओवाद धीरे–धीरे दम तोड़ने लगा है। छत्तीसगढ़ के सर्वाधिक माओवादी हिंसा के शिकार जिलों में से एक बीजापुर में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की कमान इस दौरान पुलिस उप महानिरीक्षक एस. इलंगो के हाथ में थी।

एस. इलंगो अपने इलाके में माओवादियों की गतिविधियों पर नज़र रखे हुए थे। उन्होंने अपने अधीन सभी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल बटालियनों की एक–एक कमांडो टीम तैयार की और उन्हें जब भी कोई सूचना मिलती तो वह राज्य पुलिस और अपनी इन कमांडो टीमों के साथ माओवादियों पर कहर बन कर टूट पड़ते। ऐसा ही कुछ 23 फरवरी, 2013 को भी हुआ।

बीजापुर के गंगलूर थानाक्षेत्र में 50 से 60 माओवादी एकत्र होकर पुलिस दलों पर किसी भारी हमले की योजना बना रहे थे।

मगर वो यह नहीं जानते थे कि उनके इन इरादों की भनक एस. इलंगो (डी.आई.जी. आपरेशन, बीजापुर, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल) को लग चुकी थी ।

और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की दो टुकड़ियाँ उनके इरादों को नेस्तनाबूद करने के लिए उनकी तरफ बढ़ रही थी।

एक टुकड़ी का नेतृत्व सहायक कमांडेंट अजय कुमार कर रहे थे।

और दूसरी टुकड़ी का नेतृत्व स्वयं एस. इलंगो (डी.आई.जी. आपरेशन, बीजापुर) कर रहे थे। उनके साथ सहायक कमांडेंट जी. मधु भी थे।

तभी कुछ दूर जंगल में विस्फोट और फायरिंग की आवाज आती है।

साथ में चल रहा हैड कांस्टेबल रेडियो ऑपरेटर मलिक शाहिद सैट पर कॉल करता है।

दूसरी तरफ अपने साथियों के साथ एक चट्टान की ओट लिये अजय जवाब देता है।

वह जवान और अजय अपने यू.बी.जी.एल. से टेकरी की तरफ ग्रेनेड फायर करते हैं।

इस फायर से माओवादियों में भगदड़ मच जाती है।

दूसरी तरफ मलिक इलंगो से बात कर रहा है।

नहीं सर, सभी लोग ठीक हैं, मगर माओवादी जंगल में भाग निकले हैं।
और अपनी पार्टी?
अपनी पार्टी उनका पीछा कर रही है।
हम लोगों का सरप्राइज टूट गया है, माओवादियों को हमारी मौजूदगी की सूचना मिल चुकी है।
भागते हुये माओवादी जरूर अपने कैम्प को खाली करने की कोशिश करेंगे।
सर, तो अब हम क्या करेंगे ?
हम उनके कैम्प से कितनी दूर होंगे ?
जी.पी.एस. यह दूरी करीब दो किमी. बता रहा है।
हम जितनी जल्दी हो सके उनके कैम्प पर धावा बोलेंगे, इससे पहले कि वो भाग निकले हम उन्हें घेर लेंगे ।
ओ. के. सर ।
मलिक दूसरी पार्टी को मैसेज दो कि वो पहाड़ी के पीछे की तरफ से कुरचोली गाँव की ओर बढ़ें।
यस सर ।

रेडियो ऑपरेटर मलिक कोड में बात करता है।

आगे बढ़ती हुई अपनी पार्टी को इलंगो अपना हाथ उठा कर रूकने का इशारा करता है।

सामने जंगल से बाहर कुछ घरों का एक झुरमुट दिखाई देता है।

मधु अपनी पार्टी के साथ उस तरफ निकल जाता है।

पार्टी धीरे–धीरे आगे बढ़ती है। पूरा गाँव खाली है।

इलंगो एक घर के दरवाजे पर रूक कर पोजीशन लेता है और सब इन्सपेक्टर अब्दुल समीर को इशारा करता है।

अब्दुल समीर आगे बढ़ कर घर का दरवाजा खटखटाता है।

इलंगो दरवाजा तोड़कर अन्दर घुसता है। उसके पीछे बाकी लोग भी आते हैं।

पूरे घर की
तलाशी लो ।

सब घर की तलाशी लेते हैं।

देवल कुछ कनस्तरों की तरफ इशारा करता है।
सर देखिये, बारूद है।

सावधानी से । ये तो
आई. ई. डी. हैं।

22 हैं सर ।

मलिक एक रैक की तरफ इशारा
करता है।
सर, इधर देखिये।

रैक पर ढ़ेर सारा सामान, किताबें और रुपये पड़े हैं। इलंगो एक किताब उठाता है।

ओह यह तो माओवादी साहित्य है, इतनी जल्दी में
थे कि अपना पैसा तक नहीं ले जा पाए।

उन्हें हमारे आने
का एहसास जो हो गया था।

बाहर से एक सिपाही आता है।
सर, दूसरी पार्टी भी
गाँव में पहुँच गयी है।

अब क्या आदेश है
सर ?
माओवादी अभी हम पर हमला
करने की हिम्मत नहीं करेंगे।

तो फिर क्या करें सर?
पूरे गाँव की तलाशी लो,
मगर सावधानी से ।

पूरी पार्टी निकल कर बाहर आती है।

हम लोग कुछ देर विश्राम कर पूरे इलाके को सुरक्षित करने के बाद यहाँ से कूच
करेंगे। जवानों को बोलो कि सभी लोग खाना खा लें। उसके बाद हम प्रस्थान करेंगे।

सभी जवान नजदीक के नाले से हाथ–मुँह धो कर खाना खाने लगते हैं।

इलंगो भी एक पेड़ के नीचे बैठ जाता है । मधु उसके साथ है।

शिकार हाथ से निकल गया सर।
तुम्हें रास्ते में उनका कोई निशान दिखाई दिया?
नहीं सर, लगता है उस तरफ से वो भागे ही नहीं ।
अजय की पार्टी की कोई खबर?
सर, वो लोग भी अपनी जगह पर रूके हुए हैं, हमारे साथ ही वो भी वापसी के लिए निकलेंगे।
गुड ।
देवल, इलंगो और मधु के हाथ में पत्तल में खाना देता है। दोनों खाना खाते हैं।
बेशक माओवादी हाथ से निकल गये सर, मगर यह भी कोई कम बड़ी उपलब्धि नहीं है, हमने माओवादियों के इतने बड़े कैम्प को तबाह कर दिया है। कितना बारूद और असला बरामद किया है।
उपलब्धि तो तब होती जब हम कुछ लोगों को पकड़ लेते। खबर पक्की थी। बहुत बड़े माओवादी नेता यहाँ मौजूद थे।

कहाँ तक भागेंगे सर, फिर पकड़ लेंगे, आप छोड़ने वाले थोड़े ही हैं ?
हाँ, अगर यहाँ के आदिवासियों का भला और इलाके का विकास करना है तो इन माओवादियो का तो सफाया करना ही होगा।
मगर यह इन्हीं का इलाका है सर, यहाँ इनसे मुकाबला बहुत मुश्किल है, गाँव के काफी लोग भी इनसे मिले हुए हैं।
सुआ सोई आँखों जो लड़े दीन के हेत, पुरजा पुरजा कट मरे कबहुं ना छाडे खेत।
इसका मतलब क्या है सर?
वीर–पुरुष वही है, जो दीन की रक्षा के लिए लड़ता है, भले ही उसके शरीर के टुकड़े–टुकड़े क्यों ना हो जायें, वह कभी मैदान नहीं छोड़ता । माओवादी भी यह बात समझ गये हैं कि उनका सफाया किये बिना हम मैदान छोड़ने वाले नहीं हैं। इसलिए अब सामना करने की जगह भागते फिर रहे हैं।
सर आप तमिल होते हुये भी बहुत अच्छी पंजाबी बोलते हैं। बहुत लम्बे समय तक पंजाब में तैनात रहे हैं आप ?
मेरी शुरूआती नौकरी तो पूरी पंजाब की ही है। बाद में तो मैं पंजाब पुलिस में डेप्युटेशन पर भी रहा होशियारपुर में ।

शायद इसलिए आप इतनी अच्छी पंजाबी बोल लेते है।
आप जिन लोगों के बीच रहते हैं, जिनके लिए काम करते हैं, उन्हें बिना जाने, बिना उनकी बोली बोले–समझे, उनकी तकलीफ, उनकी समस्याएँ कैसे समझ सकते हैं ?
लोग आपको पंजाब का शेर भी कहते हैं।
मैं एक बहुत साधारण आदमी हूँ। चेन्नई के नजदीक एक बहुत साधारण परिवार में मेरा जन्म हुआ । आजीविका के लिए मुझे बचपन में काम करना पड़ा। माचिस बनाने की फैक्टरी में और फिर उसके बाद एक प्रिन्टिंग प्रेस में मैंने काम किया। मैं एक गरीब आदमी का दर्द और उसका संघर्ष समझता हूँ।
फिर आप फोर्स में कैसे आ गये सर?
मुझे बचपन से ही वर्दी पहनने का बहुत शौक था । जब भी किसी आर्मी वाले को देखता तो बहुत प्रभावित होता। उस की तरह सैल्यूट मारता और बहुत खुश होता।
आप के परिवार से कोई आर्मी में था क्या ?
नहीं। शायद इसीलिए वर्दी पहनने की बहुत इच्छा थी।

मैंने पढ़ाई कभी नहीं छोड़ी, मुझ में आगे बढने की बहुत लगन थी और वर्दी पहनने की उमंग में एन.सी.सी. के नौसेना दस्ते में कैडेट कैप्टन तक रहा।

एन.सी.सी. के दौरान इलंगो आई एन एस कुतार युद्धपोत पर।

और वहीं से सीधे सी.आर.पी.एफ. में ।
नहीं मेरा अगला पड़ाव वायुसेना था।

तो फिर एयर फोर्स क्यों छोड़ी सर ?
आगे बढ़ने की इच्छा और कुछ कर गुजरने का चाह में सी.आर.पी.एफ. में भर्ती होकर सीधा आंतरिक सुरक्षा अकादमी माउंट आबू पहुंच गया।

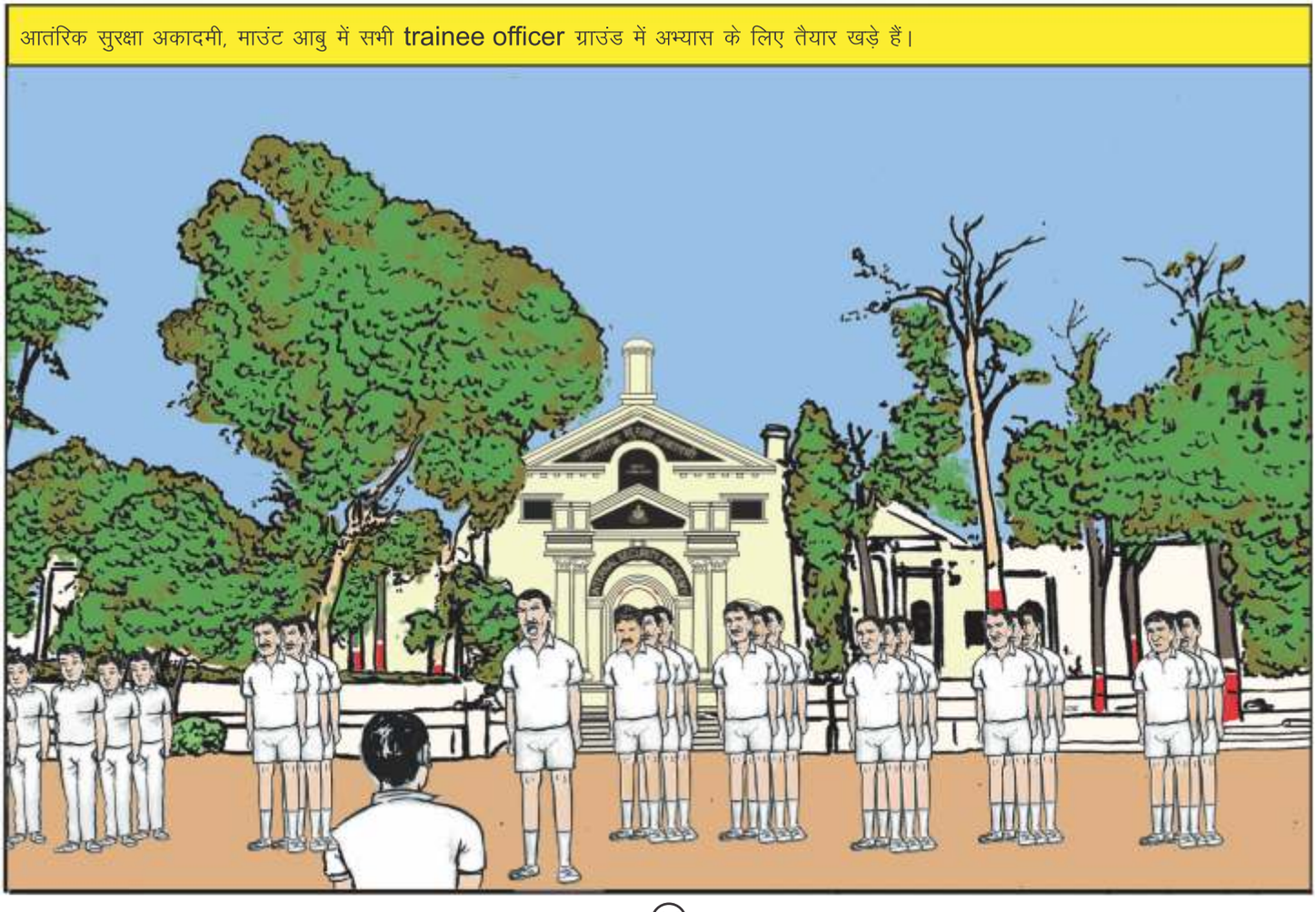

आतंरिक सुरक्षा अकादमी, माउंट आबु में सभी trainee officer ग्राउंड में अभ्यास के लिए तैयार खड़े हैं।

माउंट आबू में मुख्य इमारत के सामने वाली ग्राउंड में इलंगो पी.टी. ड्रेस में बीम अभ्यास कर रहा है। उसके बाकी साथी ताली बजा कर एक साथ बोल रहे हैं।

इलंगो नीचे कूदता है, सभी तालियाँ बजाते हैं।

इलंगो, प्रेमवीर सिंह राजौरा, राकेश शर्मा और जसबीर सिंह नक्की झील के किनारे बैठे हैं। सभी फार्मल ड्रेस में हैं।

प्रेमवीर सिंह और जसबीर सिंह, हँसकर

मधु के पास बैठा इलंगो मुस्कराता है।

73 बटालियन सी.आर.पी.एफ. का कैम्प

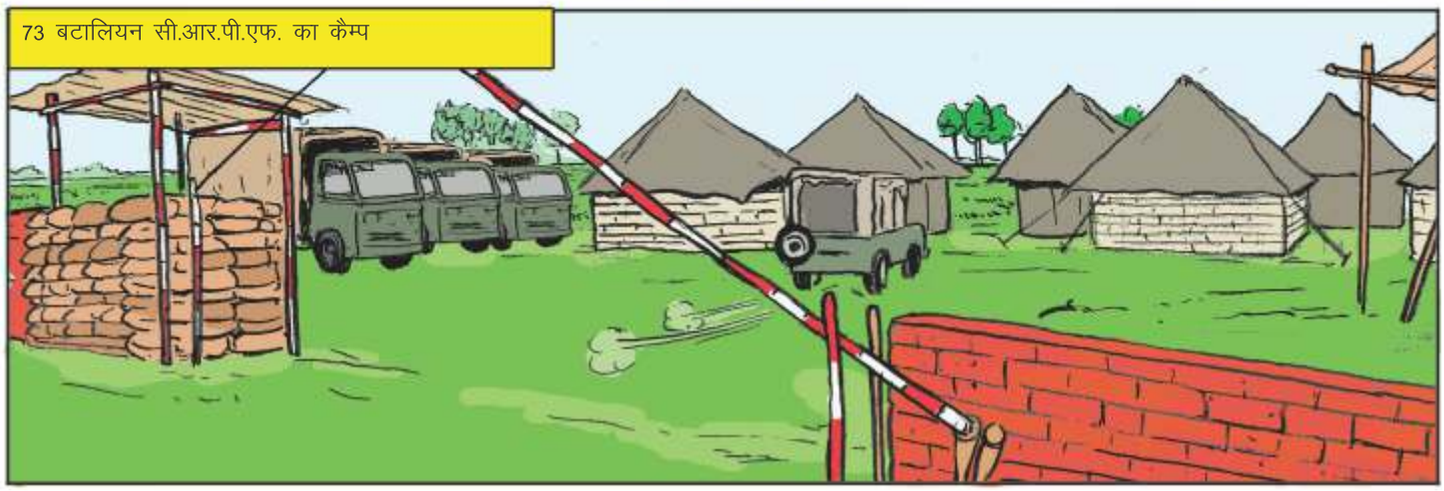

हाँ, उन दिनों आतंकवादी घटनाएँ तो बहुत देखी, मगर वो घटना आज भी मुझे याद है। 14 जनवरी, 1991 की वो सर्द शाम थी। हम बुटाला गाँव के अपने इलाके की गश्त कर रहे थे।

और वहीं आपको वीरता का पहला पुलिस पदक भी मिला ?

इलंगो और उनकी पार्टी बुटाला गाँव में एक खेत के पास से गश्त पर जा रहे हैं।

तभी खेतों में छिपे आतंकवादी अचानक उन पर फायर करने लगते हैं।

पूरी पार्टी सड़क के किनारे पेड़ों और खेत की मुंडेरों के पीछे पोजीशन लेकर फायर का जवाब देती है।

पोजीशन लो ।

संभल कर। एक भी बच कर नहीं जाना चाहिये। मलकीत तुम अपनी पार्टी के साथ दाहिनी तरफ से आगे बढ़ो, मैं इन्हें सामने से रोकता हूँ।

पूरी पार्टी दो हिस्सों में बँट कर आगे बढ़ती है और पोजीशन ले कर दोनों पार्टियाँ खेत की ओर फायर करती हैं।

भारी फायरिंग से घबराकर आतंकवादी उठकर भागने लगते हैं।

पीछा करो। मगर संभल कर।

भागते हुए आतंकवादी पलट कर फायर भी कर रहे हैं।

इलंगो और उनके सभी साथी खुद को बचाते हुए आतंकवादियों का पीछा करते हैं।

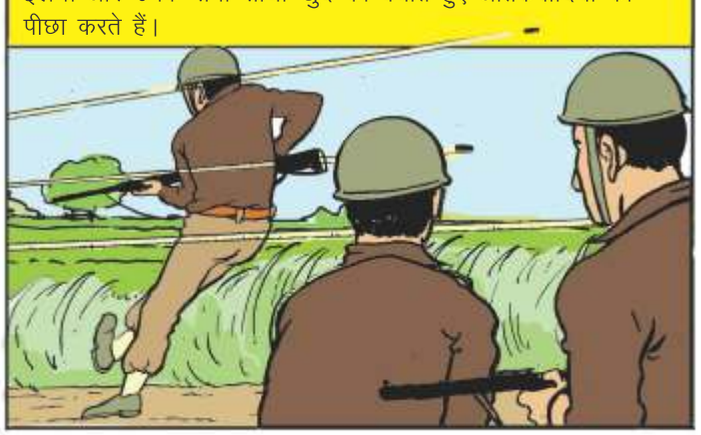

अचानक आतंकवादी अलग–अलग दिशाओं में भागने लगते हैं।

सामने भागते हुए तीन आतंकवादी खेत के बीच में बने एक फार्म हाउस की दीवार फाँद कर अंदर कूद जाते हैं।

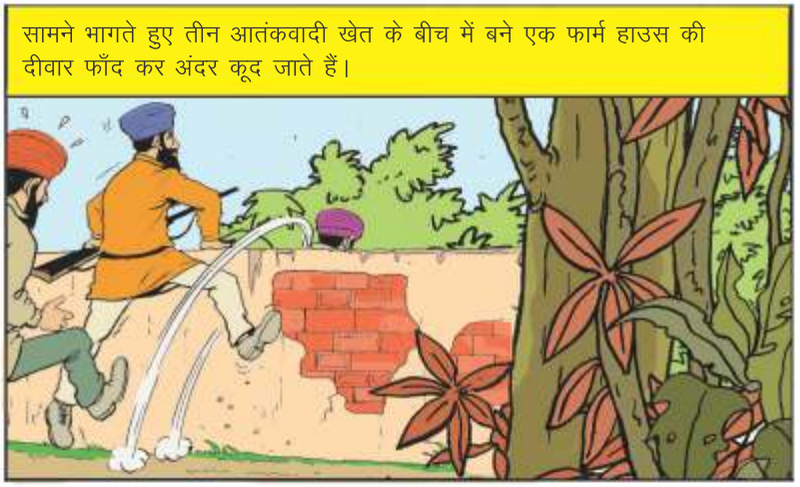

तभी आतंकवादी घर के अंदर से फायर करते हैं। इलंगो झुक कर खुद को बचा जाता है।

इलंगो अपने साथियों के साथ घुटनों के बल चलता हुआ फार्म हाउस के दरवाजे तक जाता है।

इलंगो अपने पाँच साथियों के साथ कोहनियों के बल रेंगते हुए फार्म हाउस के अंदर जाता है।

आतंकवादी फार्म हाउस की खिड़कियों से फायर कर रहे हैं। इलंगो को कवर दे रहे जवान उनकी फायरिंग का जवाब दे रहे हैं।

सिर के ऊपर से गुजरती हुई गोलियों के बीच इलंगो अपने साथी के साथ रेंगते हुए कमरे के दरवाजे तक पहुँच जाता है और इलंगो और उसका साथी दरवाजे के दोनों तरफ पोजीशन ले लेते हैं।

इलंगो कमरे के दरवाजे को लात मार कर तोड़ देता है।

अपने पाऊच से ग्रेनेड निकालता है और हाथ से पिन निकाल देता है।

पिन निकाल कर ग्रेनेड को कमरे में फेंक देता है।

एक धमाके के साथ कमरे में धुआँ भर जाता है।

इलंगो अपने साथियों के साथ सतर्कता से कमरे में घुसता है।

सामने तीन आतंकवादियों की लाशें पड़ी हैं।

इलंगो कुरचोली गाँव में एक पेड़ के नीचे मधु के साथ बैठा खाना खाते हुए बातें कर रहा है।

और आपको दूसरा मेडल कब मिला सर ?

वो कैसे सर ?

तब मैं एस.पी. ऑपरेशन होशियारपुर था। हमारे पास खबर थी कि कुछ बड़े आतंकवादी लुधियाना शहर में घुस कर कोई बड़ी वारदात करने वाले हैं। हमने उस रात लुधियाना की तरफ आने वाली तेजपुर रोड पर नाका लगा दिया।

एस.पी. इलंगो और सब–इंस्पेक्टर नरेंद्र पाल सिंह अपने अन्य साथियों के साथ नाके पर खड़े हैं।

सर, पूरी रात गुजर गयी। ढ़ाई बज रहे हैं, अभी तक तो कोई आया नहीं।

खबर पक्की है, इंतजार करो, वो आयेंगे।

सर, ये अमृत बेला है, कुछ ही देर में लोग गुरूद्वारों में जाने के लिये घरों से निकलने लगेंगे।

ठीक है, कुछ देर और इंतजार करते हैं।

तभी। सर, वो सामने से एक ट्रक आ रहा है।

रोको उसे, अच्छी तरह तलाशी लो।
रोको उसे।
सिपाही आगे बढ़ कर ट्रक को रूकने का इशारा करते हैं।
मगर ट्रक रूकने के स्थान पर नाके को तोड़ता हुआ आगे निकलने की कोशिश करता है।
और ट्रक की छत पर बैठे कुछ आतंकवादी अपने ओढ़े हुए कंबल फेंक कर, अपनी रायफलों से पुलिस दल पर फायर करने लगते हैं।
इलंगो और नरेंद्र तुरंत पोजीशन ले कर फायर का जवाब देते हैं।
ट्रक के टायरों पर फायर करो।
नरेंद्र और इलंगो निशाना ले कर ट्रक के टायरों पर फायर करते हैं। ट्रक लड़खड़ा कर सड़क के किनारे उतर जाता है।

ध्यान से, कोई भागना नहीं चाहिये।

छत पर बैठे आतंकवादी नीचे कूद कर भागने की कोशिश करते हैं।

देखो नरेंद्र वो तुम्हारी तरफ से भाग रहा है।

नरेंद्र और इलंगो दोनों फायर करते हैं।

भागते हुए आतंकवादी पलट कर ट्रक की आड़ ले लेते हैं और पुलिस दल पर फायर करते रहते हैं।
TATA

इलंगो नरेंद्र को इशारा करता है और दोनों रेंगते हुए अलग–अलग दिशाओं से ट्रक के अगले हिस्से की तरफ बढ़ते हैं।

तभी एक आतंकवादी एक पेड़ की आड़ से निशाना ले कर नरेंद्र की ओर फायर करता है। गोली नरेंद्र को लगती है।

इलंगो पलट कर उस आतंकवादी को अपनी गोली का निशाना बना देता है।

इलंगो सरकता हुआ ट्रक के सामने आता है।

पीछे आ कर ...

... वह उन पर फायर कर देता है।

इलंगो उसकी तरफ देखता है।

सिपाही ट्रक के केबिन की तरफ इशारा करता है।

इलंगो सावधानी के साथ ट्रक के पीछे से घूम कर ट्रक के दरवाजे के पास आता है और अपनी रायफल के बट से ट्रक का दरवाजा खटखटाता है ।

तभी एक आतंकवादी चिल्लाता हुआ अपनी रायफल से फायर करता हुआ ट्रक का दरवाजा खोल कर नीचे कूदता है।

मगर इससे पहले कि वह इलंगो पर फायर करे इलंगो नीचे से लेट कर ट्रक की खिड़की से कूदते आतंकवादी पर फायर कर देता है। आतंकवादी निढ़ाल हो कर नीचे गिरता है।

इलंगो अपने साथियों को इशारा करता है।

तेजी से नरेंद्र के पास जाता है।

नरेंद्र सड़क के किनारे खेत की मुंडेर का सहारा ले कर गहरी–गहरी सांसें ले रहा है।

जाओ गाड़ी ले कर आओ, हम अभी इसे अस्पताल ले कर जायेंगे।
सिपाही चला जाता है।
इलंगो नरेंद्र का सिर अपनी गोद में ले लेता है।
तुम्हें कुछ नहीं होगा नरेंद्र। हम लोग अभी अस्पताल चलेंगे।
मेरी फिक्र ना करें सर ।
बस थोड़ी हिम्मत और अपने वाहे गुरू पर भरोसा रख।
मुझे दर्द नहीं हो रहा है सर मैं इन छोटी–छोटी चोटों से नहीं घबराता।
गुरूद्वारे से आवाज आती है।
ऊँ सतनाम, करता पुरख, निरभय, निरवैरू,
अकाल मूरति, अजूनी सैभं , गुरू प्रसाद,
आदि सचु, जुगादि सचु, है भी सचु, नानक होसी भी सचु।

गुरू घर से बुलावा आया है।

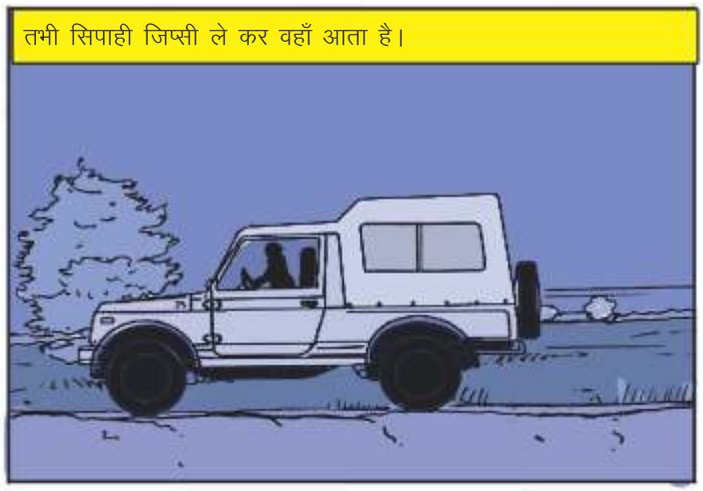
तभी सिपाही जिप्सी ले कर वहाँ आता है।

उठाओ इसे।

सिपाही इलंगो की मदद से नरेंद्र को जिप्सी में डालता है।
जय हिन्द सर!

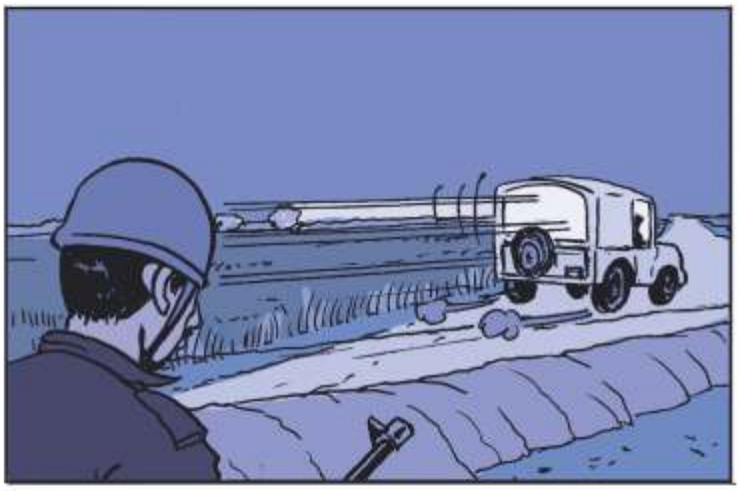

जंगल में मधु की बगल में बैठा इलंगो मधु को इस घटना के बारे में बता रहा है।
हाँ इस मुठभेड़ में चार कुख्यात आतंकवादी मारे गये थे। उनके पास से सात रायफलें, भारी मात्रा में गोली–बारूद और पांच लाख रूपये नकद बरामद किये गये।

और इसके लिये भी आपको वीरता का पुलिस पदक मिला !

पहला पुलिस पदक बार।
ग्रेट सर !

तभी कुछ दूर पटाखे फटने की आवाज आती है। सभी सतर्क हो जाते हैं।
सर फायर आ रहा है।
BOOMM
सबको बोलो होशियार हो जाएँ।
सर ये फायरिंग नहीं पटाखों की आवाज है।
हाँ, लगता है माओवादी भागे नहीं यहीं जंगल में छिपे हैं।
वो हमारी पोजीशन जानने के लिये ये हरकत कर रहे हैं।
हाँ, ताकी हम आवेश में आ कर फायर करें और उन्हें हमारी पोजीशन पता चल जाये। कोई फायर नहीं करेगा।
तो क्या आदेश है सर ?
तुरंत सभी अपनी अपनी पोजीशन संभाल लो, जब तक आदेश ना मिले कोई फायर नहीं करेगा। तुरंत।

सभी पेड़ों, चट्टानों के पीछे अपनी अपनी पोजीशन ले लेते हैं।

दूसरी तरफ कुछ माओवादी अपने हथियार थामे दबे पाँव आगे बढ़ रहे हैं।

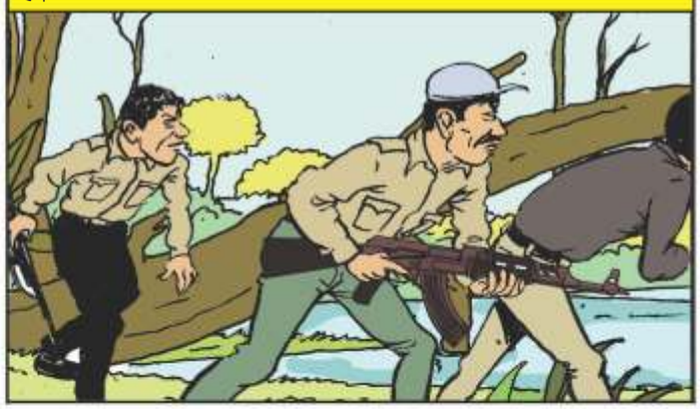

एक माओवादी अपने एक साथी को इशारा करता है।

वह माओवादी एक चट्टान पर अपनी एल. एम. जी. टिका कर सामने की तरफ एक बर्स्ट मारता है।

पुलिस दल फौरन आड़ ले लेता है।

इलंगो झांक कर देखता है, सामने 10–15 माओवादी अपनी पोजीशन ले रहे हैं।

मधु अपनी पार्टी को ले कर एक तरफ को निकल जाता है।

माओवादी सामने से कोई जवाब ना पा कर अपने ठिकानों से निकल कर सावधानी से आगे बढ़ने लगते हैं।

इलंगो, हैड कांस्टेबल मलिक शाहिद और सब–इंस्पेक्टर अब्दुल समीर उन्हें आगे बढ़ते हुए देखते हैं।

जैसे ही माओवादी आगे निकल कर खुले में आते हैं, इलंगो चिल्लाता है।

पूरा पुलिस दल दो तरफ से माओवादियों पर फायर खोल देता है। माओवादियों में भगदड़ मच जाती है और वह फायर करते हुए वापस भाग जाते हैं।

दो माओवादी नीचे गिर जाते हैं।

जिन्हें माओवादी घसीट कर अपने साथ ले जाते हैं।

पुलिस दल अपनी आड़ से निकल कर माओवादियों के पीछे भागता है।

बुरी तरह घायल और बिखरे हुए माओवादी एक नाले में पत्थरों के पीछे आड़ ले लेते हैं। और पुलिस दल की तरफ फायर करने लगते हैं।

पुलिस दल भी आड़ ले कर उनके फायर का जवाब देता है।

अपने यू.बी.जी.एल. में ग्रेनेड लोड कर नाले की तरफ फायर करता है।

बाकी लोग भी नाले की तरफ ग्रेनेड फायर करते हैं।

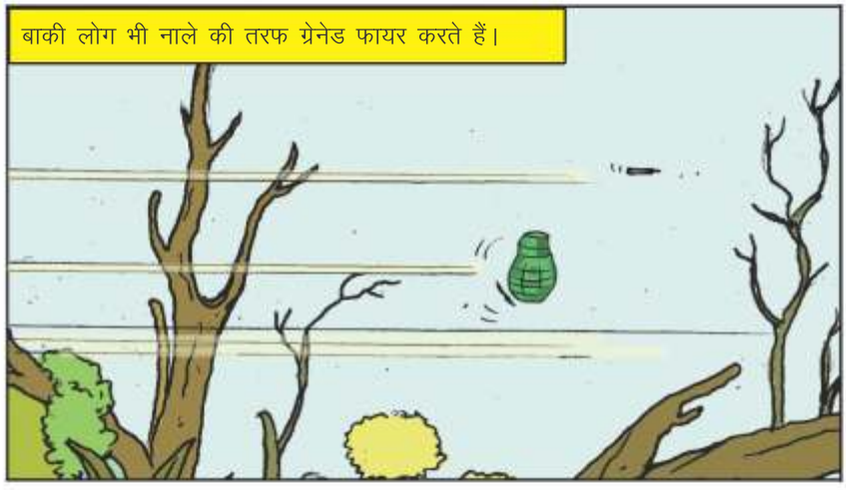

पुलिस दल की दोनों टुकड़ियाँ माओवादियों की तरफ से आ रहे फायर की परवाह किये बिना फायरिंग के साथ–साथ ग्रेनेड दागते हुए नाले की तरफ बढ़ती हैं।

इस भारी हमले से घबरा कर माओवादी नाले से निकल कर भागने लगते हैं।

जब तक पुलिस पार्टी नाले के पास पहुँचती है, माओवादी वहाँ से भाग जाते हैं।

सामने कुछ दूर एक माओवादी की लाश पड़ी है। पास ही उसकी रायफल भी पड़ी है।

जैसे ही पुलिस दल आगे बढ़ता है, जंगल में छिपे माओवादी उन पर फायर करना शुरू कर देते हैं।

पुलिस दल तुरंत पलट कर आड़ ले कर फायर का जवाब देता है।

अंधेरा हो रहा है सर क्या करेंगे ?

हम रात भर यहीं एम्बुश में बैठेंगे। माओवादी इस लाश को उठाने की कोशिश जरूर करेंगे और हम ये होने नहीं देंगे।

माओवादी की तरफ से फिर फायर की आवाज आती है।

सर, वो फायर कर रहे हैं।

करने दो। कोई अपनी पोजीशन से नहीं हिलेगा।

कुछ देर शांति के बाद माओवादी दबे पाँव लाश की तरफ बढ़ते हैं।

इलंगो निशाना लगाकर उन पर फायर करता है।

माओवादी पलट कर भाग जाते हैं।

रात भर यह खेल चलता रहा और सुबह होने से पहले माओवादी अपना स्थान छोड़ कर भाग खड़े हुए।

तभी दूर से मधु चिल्लाता है।

इलंगो उसकी तरफ देख कर अपना अँगूठा उठा कर थम्स अप का इशारा करता है।

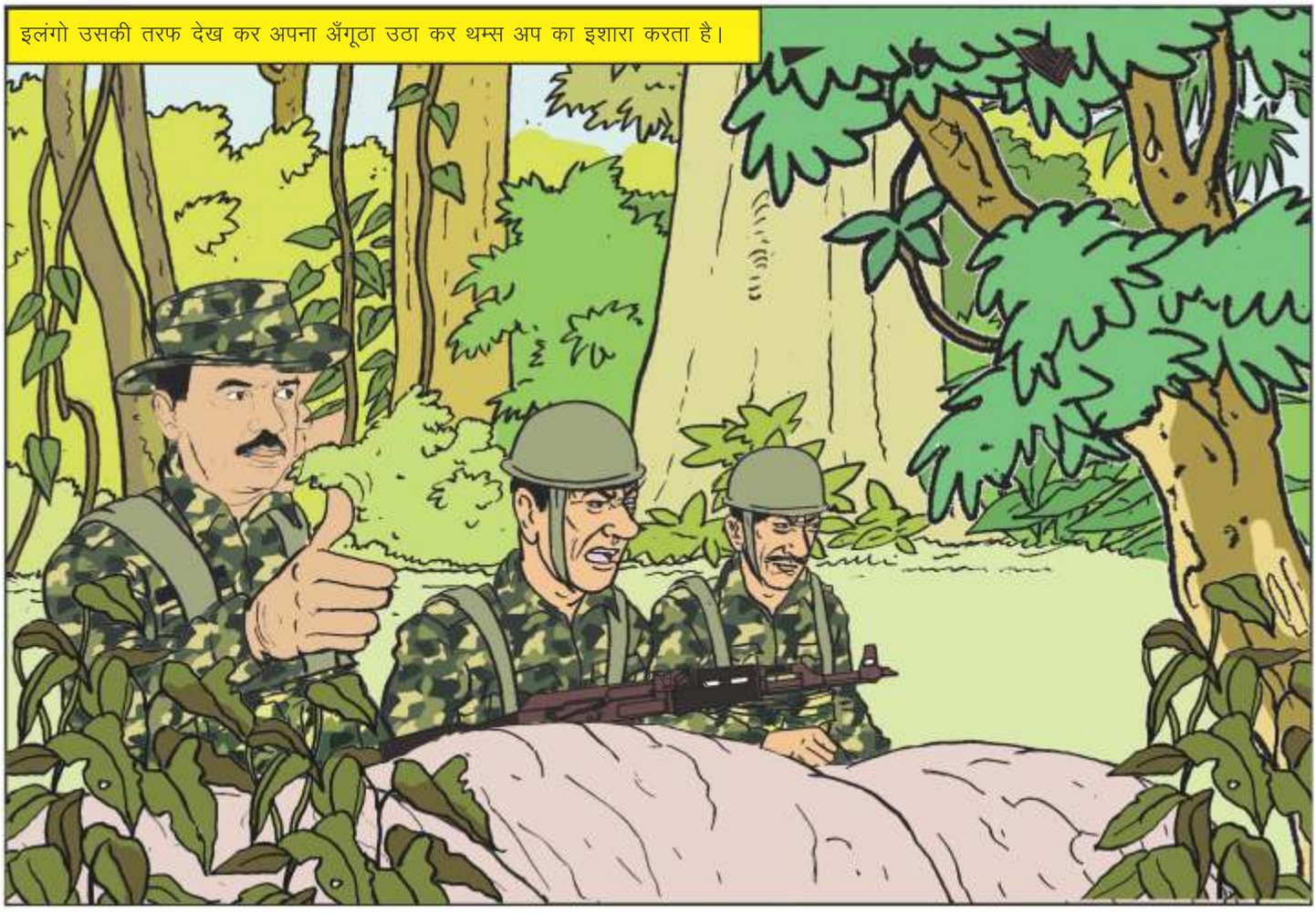

के.रि.पु.बल दिल्ली शौर्या में गृहमंत्री के सामने श्री एस. इलंगो खड़े हैं। पार्श्व में आवाज गूंज रही है। यह पहला मौका था जब माओवादी अपने दो साथियों की लाशें पीछे छोड़ कर भाग खड़े हुए। मारे गये माओवादियों की पहचान दंडकारण्य क्षेत्र के कुख्यात माओवादी सलीम और किस्मत के रूप में की गयी, जिनके सिर पर छः लाख और एक लाख रूपये का इनाम था। उनके पास से हथियार और गोला बारूद भी बरामद किया गया। इस ऑपरेशन में दिखायी गयी अद्वितीय वीरता, अदम्य साहस और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता के लिये श्री एस. इलंगो, पुलिस उप महानिरीक्षक, परिचालन, बीजापुर को वीरता के द्वितीय पुलिस पदक बार से सम्मानित किया जा रहा है।

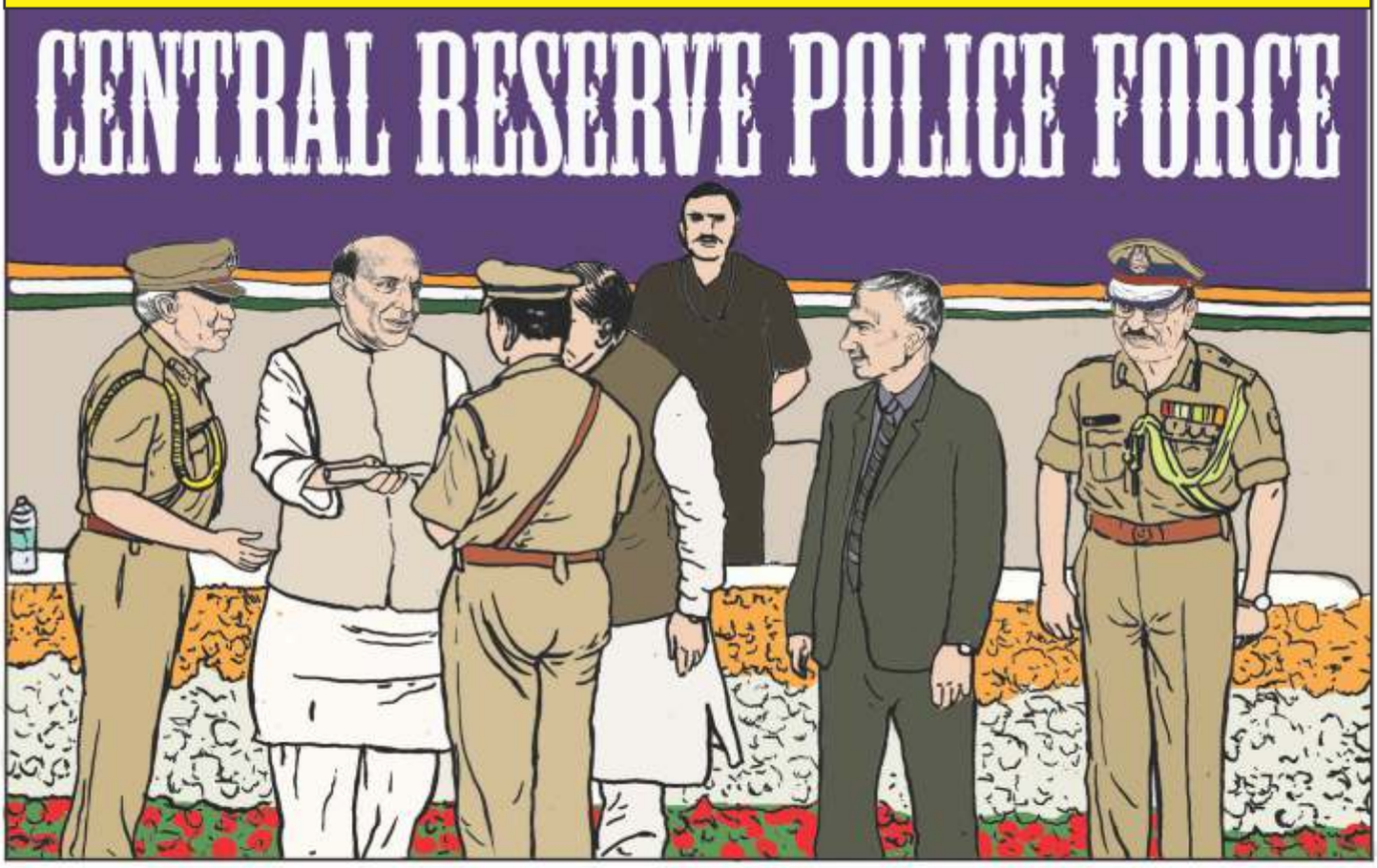

23 फरवरी, 2013 को बीजापुर जिले के कुरचोली गाँव में माओवादियों के विरुद्ध एक बड़े आपरेशन का संचालन स्वयं श्री एस. इलंगो पुलिस उप महानिरिक्षक बीजापुर रेंज ने किया और अतुल्य वीरता, साहस, सूझबूझ, पूर्व रण–कौशल और नेतृत्व–कुशलता का परिचय देते हुए दो कुख्यात माओवादी कमांडरों को मार गिराया, जिन के सिर पर भारी इनाम था और वह कई बेगुनाहों और सुरक्षा कर्मियों की हत्याओं के लिए जिम्मेदार थे।

उन के पास से भारी मात्रा में गोली बारुद बरामद किया गया। इससे पूर्व श्री इलंगो ने माओवादियों के एक पूरे कैम्प को ध्वस्त कर दिया। बीजापुर में माओवादियों की आँख की किरकिरी बने एस. इलंगो और उनकी टीम का यह कोई पहला कारनामा नहीं था।

उनकी इस उपलब्धि, देशभक्ति और कर्तव्य पर मर मिटने की अटूट दास्तां के लिए उन्हें वीरता के पुलिस पदक के दूसरी बार से सम्मानित किया गया। इस आपरेशन में दिखाई गयी अपूर्व वीरताएँ, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता के लिए श्री एस. इलंगो के साथ जी. मधु, सहायक कमांडेंट, हैड कांस्टेबल रेडियो आपरेटर मलिक शाहिद अहमद और सिपाही देवल साब को भी वीरता के पुलिस पदकों से सम्मानित किया गया।

अलंकरण

श्री एस. इलंगो, पुलिस उप–महानिरीक्षक, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, देश के उन दिलेर अधिकारियों में गिने जाते हैं जिन्होंने अपनी दिलेरी, साहस और सूझबूझ से देश में आतंकवादियों, माओवादियों और देशद्रोहियों के विरुद्ध कई बड़े आपरेशनों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया है। उनकी इन सफलताओं के लिए उन्हें तीन बार वीरता के पुलिस पदकों से सम्मानित किया जा चुका है।

वीरता का पुलिस पदक द्वितीय बार

26 नवंबर, 2014

वीरता का पुलिस पदक प्रथम बार

10 जुलाई, 1995

वीरता का पुलिस पदक

26 मई, 1992

डी जी के.रि.पु.बल प्रशंसा डिस्क

8

डी जी असम प्रशंसा डिस्क

1

डी जी जम्मू और कश्मीर प्रशंसा डिस्क

1

श्री एस. इलंगो
पुलिस उप–महानिरीक्षक

जी. मधु नायर
डिप्टी कमान्डेंट

वीरता का पुलिस पदक

2

डी जी के.रि.पु.बल प्रशंसा डिस्क

8

हैड कांस्टेबल/रेडियो ऑपरेटर
मलिक शाहिद अहमद

वीरता का पुलिस पदक

1

कॉन्सटेबल देवल साब

वीरता का पुलिस पदक

1

डी जी के.रि.पु.बल प्रशंसा डिस्क

2

सरदार पोस्ट
एक शौर्य गाथा

9 अप्रैल, 1965 को गुजरात के रण आफ कच्छ में वीरता, साहस और रण कौशल की एक अद्वितीय मिसाल रची गयी जब केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक छोटी सी टुकड़ी ने एक पूरी पाकिस्तनी ब्रिगेड को न केवल धूल चटा दी बल्कि उसे पराजित कर पीछे लौटने पर भी मजबूर कर दिया। दुनिया के युद्ध इतिहासों में दर्ज एक अनूठी शौर्य गाथा।

वीर भृगुनंदन

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रथम कीर्ति चक्र प्राप्त करने वाले अमर शहीद भृगुनंदन चौधरी की कहानी वीरता, साहस, बलिदान और मित्र भाव की पराकाष्ठा की कहानी है। यह कहानी है उस जवान की जो बारूदी सुरंग में अपनी दोनों टांगे गवा देने के बावजूद माओवादियों का सामना करता रहा। यह वह स्थिति थी जब माओवादियों के हमले में उसका पूरा दल बिखर गया था और उसके साथी सिपाही का भी दाहिना बाजू बारूदी सुरंग के विस्फोट में उड़ गया था। उसी स्थिति में भी उसने न केवल माओवादियों के एक बहुत बड़े दल को रोके रखा बल्कि अपने घायल साथी की भी मदद की।

शूरवीर प्रकाश

एक शौर्य चक्र और 6 वीरता के पुलिस पदकों से सम्मानित देश के सर्वाधिक अलंकृत पुलिस अधिकारी प्रकाश रंजन मिश्र के हैरत अंगेज कारनामों से भरपूर एक चित्रकथा। जानिये कैसे एक वीर अधिकारी ने एक गोली जांघ में, चार गोलियाँ दाहिनी कंधे के नीचे सीने में और एक गोली कान को छील कर निकल जाने के बावजूद, माओवादियों के विरुद्ध एक बड़े आपरेशन को सफलतापूर्वक अंजाम दिया।

श्री एस. इलंगो, पुलिस उप–महानिरीक्षक, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के हैरत अंगेज कारनामों से भरपूर चित्र कथा।

जानिये कैसे तमिलनाडु के एक साधारण ग्रामीण परिवार से आया बालक काल बन कर आतंकवादियों और माओवादियों पर टूट पड़ा। वीरता के तीन पुलिस पदकों से सम्मानित एस. इलंगो देश के उन दिलेर अधिकारियों में गिने जाते हैं जिनकी शौर्य गाथाएँ आने वाली पीढ़ियों को गर्व के साथ सुनाई जाएँगी। छत्तीसगढ़ के बीजापुर में माओवादियों पर काल बन कर टूट पड़े एस. इलंगो की कहानी अब चित्रकथा प्रारुप में।